1937C For world peace

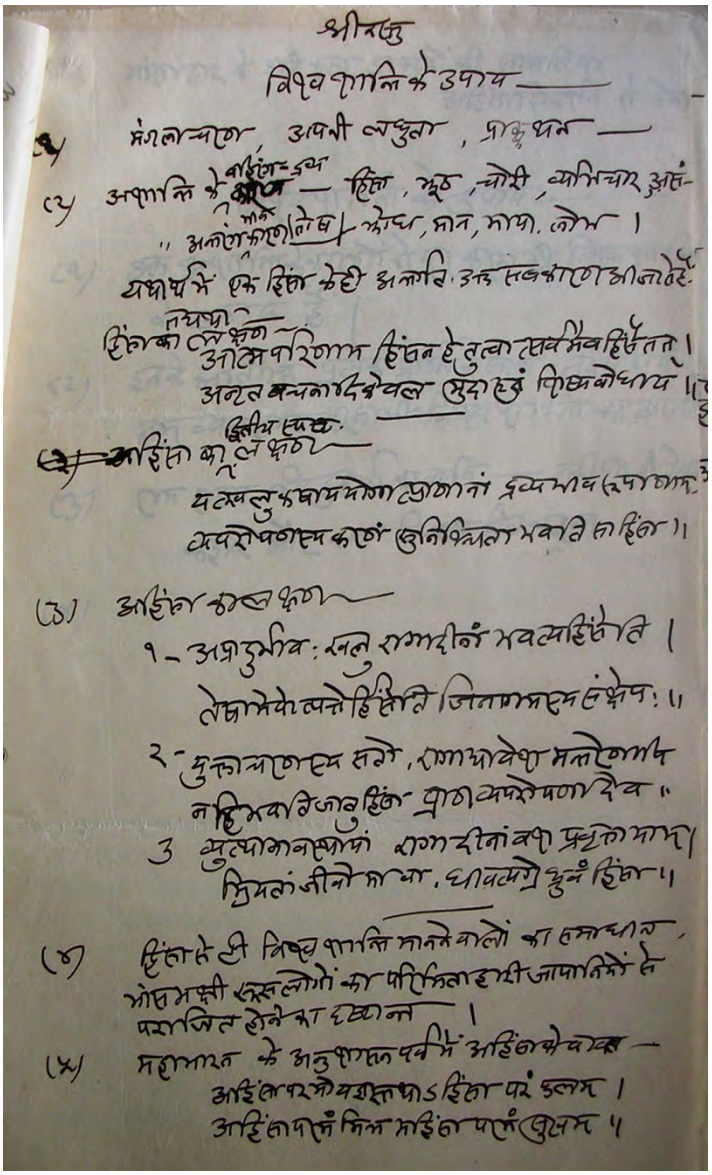

श्रीरस्तु

विश्व शान्ति के उपाय —

(1) मंगलाचरण, अपनी लघुता, प्राक्कथन —

(2) अशान्ति के बहिरंग-द्रव्य कारण — हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार, आरं-

" अन्तरंग कारण — क्रोध, मान, माया, लोभ।

यथार्थ में एक हिंसा के ही अन्तर्गत उक्त सब कारण आ जाते हैं।

हिंसा का लक्षण — तथाहि

आत्मपरिणामहिंसनहेतुत्वात्सर्वमेव हिंसैतत्।

अनृतवचनादिकेवलमुदाहृतं शिष्यबोधाय॥

द्वितीय लक्षण. हिंसा का लक्षण —

यत्खलु कषाययोगात्प्राणानां द्रव्यभावरूपाणाम्।

व्यपरोपणस्य करणं सुनिश्चिता भवति सा हिंसा॥

(3) अहिंसा का लक्षण —

1 – अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति।

तेषामेवोत्पत्तिर्हिंसेति जिनागमस्य संक्षेपः॥

2 – युक्ताचरणस्य सतो, रागाद्यावेशमन्तरेणापि

न हि भवति जातु हिंसा प्राणव्यपरोपणादेव॥

3 व्युत्थानावस्थायां रागादीनां वशप्रवृत्तायाम्।

म्रियतां जीवो मा वा, धावत्यग्रे ध्रुवं हिंसा॥

(4) हिंसा से ही विश्व शान्ति मानने वालों का समाधान,

मांसभक्षी लोगों का परिमित शाकाहारी जापानियों से

पराजित होने का दृष्टान्त।

(5) महाभारत के अनुशासन पर्व में अहिंसा के वाक्य —

अहिंसा परमो धर्मस्तथाऽहिंसा परं तपः।

अहिंसा परमं मित्रमहिंसा परमं सुखम्॥

) मांसाहार के प्रति रूल डाक्टरों की सम्मति का
आईनादिदर्शन ते देना

विश्वशान्ति के उपाय ——

(1) उक्त अशान्ति के कारणों को दूर करना ही विश्वशान्ति के उपाय हैं।

(2) इनके अतिरिक्त प्रत्येक प्राणी के साथ सदय एवं नम्र व्यवहार करना भी विश्वशान्ति का उपाय है।

(3) एक राज्य की दुहाई का वर्णन —— नदी का हीरे वक्र करार और राम की बातचीत करना

(4)